भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

**लोक सभा**

**तारांकित प्रश्न संख्या *1**

उत्तर देने की तारीख 20.07.2026

**ज्ञान भारतम पहल**

***1. श्री धवल लक्ष्मणभाई पटेल :**
**श्री राजकुमार चाहर :**

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत की धरोहर पांडुलिपियों को सुरक्षित रखने के लिए शुरू की गई ज्ञान भारतम पहल के उद्देश्य और प्रमुख घटक क्या हैं;

(ख) क्या भारत की पांडुलिपि और ज्ञान की विरासत के संरक्षण के लिए उक्त पहल में दक्षिण गुजरात के वलसाड निर्वाचन क्षेत्र के ढोडिया, कोकना और वरली समुदायों सहित जनजातीय समुदायों की मौखिक और पांडुलिपि परंपराओं का प्रलेखन शामिल है;

(ग) उक्त पहल के अंतर्गत ऐसी जनजातीय ज्ञान परंपराओं सहित प्राचीन पांडुलिपियों और ज्ञान की परंपरा के डिजिटीकरण, परिरक्षण और प्रसार में कितनी प्रगति हुई है;

(घ) यह पहल भारत की सभ्यता और ज्ञान की विरासत को सुदृढ़ करने के लिए किए जाने वाले व्यापक प्रयासों के साथ किस प्रकार जुड़ती है; और

(ङ) क्या सरकार के पास आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के उपयोग सहित इन डिजिटीकृत संसाधनों के साथ विद्वानजन के व्यापक जुड़ाव, सहयोग और लोगों के लिए इनकी सुलभता हेतु कोई रूपरेखा है?

**उत्तर**

**संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री**
**(गजेन्द्र सिंह शेखावत)**

(क) से (ङ) : विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

**'ज्ञान भारतम पहल' के संबंध में दिनांक 20.07.2026 को माननीय संसद सदस्यों श्री धवल लक्ष्मणभाई पटेल और श्री राजकुमार चाहर द्वारा पूछे गए लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या *1 के भाग (क) से (ङ) के उत्तर में उल्लिखित विवरण**

(क): केन्द्रीय बजट (पैरा 84) में 1 फरवरी, 2025 को उद्घोषित संस्कृति, भारत सरकार की राष्ट्रव्यापी पहल, ज्ञान भारतम का उद्देश्य भारत की पांडुलिपि धरोहर का सर्वेक्षण, प्रलेखन, संरक्षण, डिजिटलीकरण और प्रसार करना है। इस पहल में सहायता करने हेतु स्थायी वित्त समिति (एसएफसी) ने वर्ष 2025-2031 की अवधि के लिए 491.66 करोड़ रुपए संस्वीकृत किए हैं।

**ज्ञान भारतम के प्राथमिक उद्देश्य इस प्रकार हैं:**

1. पाण्डुलिपियों के डिजिटलीकरण और प्रलेखन कार्य में महत्वपूर्ण रूप से तेजी लाने के लिए उन्नत तकनीक का लाभ उठाना।
2. पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण और पंजीकरण करना।
3. भारतीय पाण्डुलिपियाँ जहाँ कहीं भी हों, उनका प्रलेखन और सूचीकरण करना, उनके बारे में सटीक और अद्यतन जानकारी और उन परिस्थितियों का रखरखाव करना जिनके तहत उन्हें संरक्षित किया जा सकता है।
4. पाण्डुलिपियों के उपयोग को सुगम बनाना और पुस्तक रूप के साथ-साथ मशीन पठनीय रूप, दोनों में प्रकाशनों के माध्यम से इन पाण्डुलिपियों तक त्वरित पहुँच को बढ़ावा देना।
5. प्रशिक्षण, जागरूकता और वित्तीय सहायता के माध्यम से पाण्डुलिपियों के संरक्षण और परिरक्षण को सुविधाजनक बनाना।
6. भारतीय भाषाओं और पाण्डुलिपिविज्ञान के अध्ययन में छात्रवृत्ति और शोध को बढ़ावा देना।
7. राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी (एनडीआर) का निर्माण करना।

**ज्ञान भारतम के मुख्य घटक इस प्रकार हैं:**

1. पांडुलिपियों का सर्वेक्षण और पंजीकरण।
2. सुदृढ़ प्रौद्योगिकी अवसंरचना और भागीदारी का निर्माण।
3. पांडुलिपियों का प्रलेखन।
4. पांडुलिपियों का संरक्षण।
5. पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण।
6. पांडुलिपियों का प्रकाशन।
7. क्षमता निर्माण और शोध।

(ख): ज्ञान भारतम पहल की शुरुआत अखिल भारतीय स्तर पर केवल पांडुलिपियों से संबंधित कार्यकलापों को करने हेतु की गई है और इसके लाभ देश के किसी विशिष्ट समुदाय या क्षेत्र तक ही सीमित नहीं हैं।

(ग): पूरे देश में उपलब्ध डिजिटलीकृत पांडुलिपियों की कुल संख्या 8 लाख से अधिक है जिनमें से 3,53,947 पांडुलिपियां वर्तमान में ज्ञान भारतम पोर्टल पर जनता की सुलभ पहुंच के लिए उपलब्ध हैं।

(घ): इस पहल में शैक्षणिक संस्थाओं, संग्रहालयों, पुस्तकालयों और निजी संग्रहकर्ताओं के बीच सहयोग स्थापित करते हुए भारत की सभ्यतागत और ज्ञान विरासत को सुदृढ़ करने के लिए व्यापक स्तरीय प्रयास शामिल हैं ताकि एक करोड़ से अधिक पांडुलिपियों को प्रलेखित और परिरक्षित किया जा सके। इसमें उन्नत प्रौद्योगिकी और कृत्रिम मेधा की सहायता से राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी (एनडीआर) की स्थापना की परिकल्पना भी की गई है ताकि परिरक्षण को सुगम बनाया जा सके, अभिगम्यता को बेहतर बनाया जा सके और भारत की समृद्ध पांडुलिपि धरोहर तक पहुंच वैश्विक स्तर पर हो सके।

(ड.): राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी के माध्यम से सार्वजनिक पहुंच और विद्वानजन के व्यापक जुड़ाव हेतु रूपरेखा में निम्नलिखित शामिल हैं:

- देश भर की संस्थाओं और निजी अभिरक्षकों से प्राप्त डिजिटलीकृत पांडुलिपियों को एकीकृत करते हुए राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी (एनडीआर) का सृजन।
- शोध, प्रलेखन, संरक्षण, प्रकाशन और प्रसार के लिए शैक्षणिक शोध और सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ सहयोग।
- पांडुलिपि संग्रहों की अंतर-संचालनीयता, खोजनीयता और दीर्घकालिक परिरक्षण सुनिश्चित करने हेतु डिजिटलीकरण और मेटाडेटा मानकीकरण।
- पांडुलिपि की विषयवस्तु तक बेहतर पहुंच के लिए लिप्यंतरण, अनुवाद और अर्थ संबंधी खोज हेतु ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (ओसीआर), हस्तलिखित पाठ पहचान (एचटीआर), बृहतर भाषा लिपि मॉडल (एलएलएसएम) सहित एआई-सक्षम प्रौद्योगिकियों का विकास।
- स्कॉलरों को वैज्ञानिक, दुर्लभ और समकालीन विषयक पांडुलिपियों पर कार्य करने और महत्वपूर्ण अंतर-विषयक, बहुभाषी, क्षेत्रीय भाषा प्रकाशनों का सृजन करने हेतु प्रोत्साहित करना।

*****